# संस्तुति पत्र

हम संस्तुति करते हैं कि, कु.बाळुताई मारूती नांगरे द्वारा प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध **''रामरदश मिश्र के उपन्यासों में सामाजिक जीवन'' ('पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' के संदर्भ में)** परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

**(प्रा. बी. डी. सगरे)**
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

**(आर. जी. चव्हाण)**
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

# प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, **कु. बाळुताई मारूती नांगरे** ने मेरे निर्देशन में **''रामदरश मिश्र के उपन्यासों में सामाजिक जीवन'' ('पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' के संदर्भ में)** यह शोध प्रबंध एम.फिल उपाधि के लिए तैयार किया है। उनकी यह मौलिक रचना है।

V.V. Kotabage

**(डॉ. व्यं. वा. कोटबागे)**
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई,
जि. सातारा (महाराष्ट्र)

वाई
दिनांक : 25/6/2009

# प्रतिज्ञापत्र

मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मेरे संशोधन का विषय **''रामदरश मिश्र के उपन्यासों में सामाजिक जीवन'' ('पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' के संदर्भ में)** सर्वथा मौलिक है। प्रस्तुतीकरण के पहले इस विषयपर इस या अन्य विश्व विद्यालय में इसे प्रस्तुत नहीं किया गया है।

B. M. Nangare

**(कु. बाळुताई मारूती नांगरे)**

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,

सातारा (महाराष्ट्र)

सातारा

दिनांक : 28-6-2001

# भूमिका

साहित्य की अनेक विधाएँ हैं। इन सब साहित्यिक विधाओं में मानव जीवन से गहरा संबंध रहा है। परंतु साहित्य की 'उपन्यास' एक ऐसी विधा है जो अन्य विधाओं की अपेक्षा मानव जीवन के सर्वाधिक निकट है। उपन्यास मानो मानव जीवन का एक सच्चा दर्पण है। उपन्यास का जन्म कल्पना से हुआ लेकिन आगे चलकर यथार्थवाद उसका अंग बन गया। इसी यथार्थवादी प्रवृत्ति के कारण अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास मानव जीवन के अधिक निकट आया।

मैंने भी आज तक साहित्य की अनेक विधाओं का अध्ययन किया, परंतु इन सभी विधाओं में उपन्यास विधा में ही मुझे मानव जीवन का सच्चा प्रतिबिंब देखने मिला है। इन साहित्यिक विधाओं के अध्ययन पथ में मुझे अनेक लेखक-लेखिकाओं ने प्रभावित किया। परंतु मुझे सबसे अधिक प्रभावित करने वाले लेखक, उपन्यासकार 'रामदरश मिश्र' जी रहे हैं। स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्यिक क्षेत्र के रामदरश मिश्र एक प्रभावशाली लेखक हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास-साहित्य को जिन साहित्यिकारों ने समृध्द किया है और दिशा दी है उनमें रामदरश मिश्र का महत्वपूर्ण स्थान है। आपकी कृतियों में नये मूल्यों के अन्वेषण की छटपटाहट है। जिन संस्कारों को लेकर कथाकार ने आरम्भ में लेखनी उठाई तब आप गांधीवादी रहे परंतु समयके साथ उसके अर्थहीन अंश छेडते गये है और संप्रति, गांधीवाद, समाजवाद और आधुनिकता के योग को अपनी पहचान के रूप में रेखांकित किया है। आपके उपन्यासों के केंद्र में मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग ही रहा है। आपके साहित्य में मुख्यत: स्वतंत्रता के बाद के जीवन-यथार्थ के बहुरंगी चित्र प्रगति चिंतन से अनुशासित होकर उभरे हैं। आपके उपन्यास आंचलिक होने से ग्राम आंचल का यथार्थ

वर्णन मिलता है। आपके उपन्यासों में महानगरों से कुछ दूर ग्राम-जीवन के बनते बिगडते स्वरूप का चित्रण मिलता है। आधुनिक संवेदना ने जिन स्तरों पर मनुष्य को प्रभावित किया, मूल्यगत संकट के संघर्ष की जमीन पर खडा किया - उसकी यथार्थवादी तस्वीर अनेक उपन्यासों में प्राप्त होती है। सामाजिक संदर्भों को केंद्र बनाकर लिखे गये उपन्यासों में ग्रामचेतना के प्रसंग में 'पानी के प्राचीर' और 'जल टूटता हुआ' उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

रामदरश मिश्रजी के उपन्यास साहित्य का प्रभाव और मेरे आदरणीय गुरूवर्य डॉ .श्री.व्यं.वा.कोटबागेजी की प्रेरणा से ही मैं प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध पूरा कर सकी। प्रस्तुत विषय को लेकर मेरे गुरूवर्य श्री. व्यं. वा. कोटबागेजी ने मुझे सुयोग्य मार्गदर्शन किया, इसलिए मैं उनकी हृदय से ऋणी हूँ। डॉ. बी. डी. सगरे, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग प्रमुख, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा तथा डॉ. सौ. छायादेवी घोरपडे, डॉ. श्री. एच. जी. साळुंखे, छ.शिवाजी महाविद्यालय, सातारा, इनकी सहायता के लिए मैं उनकी भी कृतज्ञ हूँ। अध्ययन में सहायता करने वाले श्री. एस. ई. जगताप, ग्रंथपाल, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्याल, सातारा, श्री.गायकवाड, ग्रंथपाल, छ. शिवाजी महाविद्यालय, सातारा तथा इनके सहयोगी कर्मचारियों की भी मैं ऋणी हूँ। विशेष रूप से मा.प्राचार्य श्री. आर. जी. चव्हाण, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के भी मैं आभारी हूँ। मुझे जिन लेखकों एवं विद्वानों के किताबों की सहायता मिली मैं उन सबकी कृतज्ञ हूँ।

सबसे पहले मैं मेरे स्वर्गीय जीजाजी कै. श्री. अरविंद बाजीराव जायगुडे की अत्यंत ऋणी हूँ, जिनकी प्रेरणा से मैं अपनी महाविद्यालयीन शिक्षा पूरी कर सकी तथा मेरे इस शोधकार्य को अधिक प्रोत्साहित करनेवाले मेरे पति श्री. सुधीर रामराव गाढवे की मैं अत्यंत हृदय से ऋणी हूँ जिन्हों ने शोध कार्य पूरा करने के लिए बहुत मदद की।

इसके अलावा मेरी माता-पिता श्री.मारूती नांगरे और कै.सौ.कृष्णाबाई नांगरे की ऋणी हूँ, क्यों कि आपसे मुझे हमेशा प्रेरणा मिलती रही। तथा मेरे ससूर श्री. रामराव गाढवे की

ऋणी हूँ जिन्होंने शोधकार्य पूरा करने के लिए समय देकर बहुत बडी सहायता की। तथा मेरे भाई महेश, नंदकुमार और मित्र अजय हमेशा सहायता करते रहे।

अंत में इस लघु शोध प्रबंध को अत्यंत कम समय में टंकित करनेवाले मे. रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री. मुकुंद ढवलेजी तथा उनके सहकारी श्री. राजू कुलकर्णीजी की कृतज्ञ हूँ।

B.M. Nangare

सातारा (कु.बाळुताई मारूती नांगरे)

दिनांक : 28-6-2001